अध्याय–12
प्रमुख प्राकृतिक संसाधन

❖ जो संसाधन हमें प्रकृति से प्राप्त होते है तथा जो मानव के लिए उपयोगी है प्राकृतिक संसाधन कहलाते है।

प्राकृतिक संसाधन के प्रकार

विकास एवं प्रयोग के आधार पर		उद्गम या उत्पत्ति के आधार पर		भण्डारन या वितरण के आधार पर	
वास्तविक संसाधन (जिनकी मात्रा पता हो तथा जिनका उपयोग हम इस समय कर रहे है। उदा0 महाराष्ट्र में काली मिट्टी	संभाव्य संसाधन (जिनकी मात्रा हमें पता नहीं हो तथा जिनका उपयोग हम इस समय नहीं कर रहे हो। उदा0 लद्दाख में यूरेनियम)	जैव संसाधन (सजीव या जीवित वस्तुए उदा0 पेड पौधे जीव जन्तु)	अजैव संसाधन (निर्जिव या जो जीवित ना हो ऐसी वस्तुए उदा0 वायु, प्रकाश	सर्वव्यापक संसाधन (जो वस्तु सभी जगह पाई जाती हो उदा0 वायु)	स्थानिक संसाधन (जो वस्तु कुछ विशेष स्थान पर पाई जाती हो उदा0 तांबा, लोहा, अयस्क)

नवीकरणीय संसाधन	अनवीकरणीय संसाधन
(1) जिनका प्रकृति में पुनः चक्रण किया जा सकता है। (2) यह संसाधन असीमित है। उदा0 सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा,	(1) जिनका प्रकृति में पुनः चक्रण नहीं किया जा सकता है। (2) यह संसाधन सीमित है। उदा0 कोयला, पेट्रोलियम

प्राकृतिक संसाधनो का प्रबन्धन :–

❖ प्राकृतिक संसाधनो व उनके अपशिष्ट का प्रभावी ढंग से उपयोग करना प्राकृतिक संसाधनो का प्रबन्धन कहलाता है।

❖ जनसंख्या वृद्धि तथा प्रोद्योगिकी के विकास द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग बढा है जिसके इनके अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।

न्याय संगत उपयोग एवं संरक्षण :–

❖ प्राकृतिक संसाधनो का योजनाबद्ध, समुचित और विवेकपूर्ण उपयोग ही उनका संरक्षण है।

संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता :–

❖ जनसंख्या वृद्धि, ओद्योगिकीकरण, और शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनो का अतिदोहन हो रहा है जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड रहा है। जिससे मानव का अस्तित्व खतरे में आ रहा है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण की आवश्यकता है।

संसाधनों के संरक्षण के उपाय :–

❖ सीमित संसाधनो का विवेकपूर्ण व न्यायसंगत उपयोग करना चाहिए।

❖ सीमित संसाधन (कोयला, पेट्रोलियम) के विकल्प खोजना

❖ सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर पूर्ण सहयोग मिलना चाहिए।

वन संरक्षण एवं प्रबन्धन :–

परिभाषा :– वनो का विवेकपूर्ण उपयोग ही वन संरक्षण है।

उपाय :– 1. वृक्षारोपण

www.teachergyan.com

2. अग्निरक्षा पथ
3. कीटनाशको का उपयोग एंव रोग ग्रस्त वृक्षों को हटा कर
4. विविधता पूर्ण वनो की प्राथमिकता
5. झूम कृषि पद्धति पर रोक
6. जनचेतना
7. सामाजिक वानिकी को प्रोत्साहन
8. वन संरक्षण नियमो की अनुपालना

सामाजिक वानिकी :– सामाजिक हितो को ध्यान में रखते हुए वनो को प्रोत्साहन दिया जाना सामाजिक वानिकी कहलाता है।

प्रमुख घटक :–

(1) कृषि वानिकी

(2) वृक्षारोपण (सार्वजनिक भूमि पर)

(3) वन विभाग द्वारा सामुदायिक वृक्षा रोपण

वन्य जीव संरक्षण :–

- भारत की भूमि का क्षेत्रफल संसार की भूमि के क्षेत्रफल का 2.4प्रतिशत है जबकि विश्व की कुल जैव विविधता में से 8.1प्रतिशत जातियॉ यहॉ पाई जाती है।
- वन्य जीव प्रकृति में पाए जाने वाले सभी जीव जन्तु एवं पेड पौधो की जातियों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

वन्य जीवो के विलुप्त होने के कारण :–

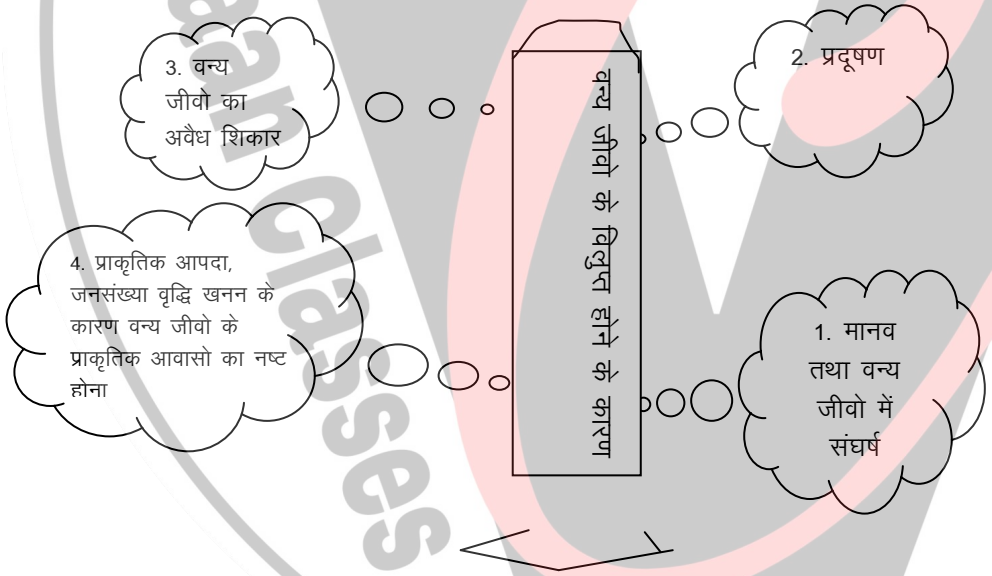

(1) (2) (3) (4)

मानव के कारण प्रदूषण हुआ जिससे वन्य जीवो के प्राकृतिक आवास नष्ट हुए।

राष्ट्रीय उद्यान :–ऐसा प्राकृतिक क्षेत्र जहॉ वन्य जीवो व पेड़ पोधो का संरक्षण किया जाता है।

– शिकार व पालतू जानवरो की चराई पर प्रतिबन्ध होता है।
– निजी संस्था द्वारा निजी कार्यो के लिय प्रवेश निशेध होता है।
– केन्द्र सरकार का नियंत्रण होता है।

www.teachergyan.com

क0सं0	राष्ट्रीय उद्यान	राज्य	Trick
1	गिर	गुजरात	गिर गुज
2	ग्रेट हिमालय	हिमाचल प्रदेश	ग्रेट हिमाचल
3	काजिरंगा	असम	काजी सम
4	सुन्दरवन	पश्चिम बंगाल	सुन्दर बंगाल
5	कारबेट	उत्तरांचल	कांचल
6	सतपूडा	मध्य प्रदेश	सम
7	बांदीपूर	कर्नाटक	बाक
8	रणथम्भौर, कैवलादेव	राजस्थान	रण केवल राज

अभ्यारण्य:–

- ऐसा प्राकृतिक क्षेत्र जहॉ पर जानवरो के शिकार पर पूर्व प्रतिबन्ध हो तथा निजी संस्था को रचनात्मक क्रिया कलाप करने के लिए ही अनुमति दी जाती है।
- अभ्यारण सरकार, निजीसंगठन या व्यक्ति भी चला सकते है परन्तु नियंत्रण सरकार का ही होता है।
- नागार्जुन सागर अभ्यारण्य – आन्ध्र प्रदेश
  हजारी बाग प्राणी विहार – बिहार
  नाल सरोवर प्राणी विहार – गुजरात
  मनाली अभ्यारण्य – हिमाचल प्रदेश
  चन्द्रप्रभा प्राणी विहार – उत्तर प्रदेश
  केदारनाथ प्राणी विहार – उत्तरांचल

राजस्थान के प्रमुख वन्य जीव अभ्यारणय :–

क0सं0	वन्य जीव अभ्यारणय	स्थान	प्रमुख वन्य जीव
1	तालछापर	चुरू	काला हिरण
2	सरिस्का	अलवर	हिरण गोडावन
3	दर्रा	कोटा	बघेरा
4	माउन्ट आबू	सिरोही	जंगली मुर्गा
5	कैलादेवी	करोली	रीछ
6	नाहरगढ	जयपुर	तेन्दुआ, सियार
7	सीतामाता	प्रतापगढ	उडन गिलहरी
8	जवाहर सागर	कोटा	घडियाल

जीवमण्डल निचय या बायोस्फियर रिर्जव :–

- वे प्राकृतिक क्षेत्र जो वैज्ञानिक अध्ययन के लिए शांत क्षेत्र घोषित हो जीवमण्डल निचय कहलाता है।
- विश्व में 669 जीवमण्डल निचय है जिसमें से भारत में 18 है।
- भारत का प्रथम जीवमण्डल निचय 1986 में नीलगिरी है जो कर्नाटक तथा केरल में है।

क0सं0	प्रदेश	जैवमण्डल नाम
1	अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	ग्रेट निकोबार
2	असम	काजीरंगा, मानस
3	उत्तर प्रदेश	नन्दा देवी
4	पश्चिम बंगाल	सुन्दरवन
5	मध्य प्रदेश	कान्हा
6	राजस्थान	थार रेगिस्तान

जल संरक्षण एवं प्रबन्धन :–

- जल स्त्रोतो का प्रदूषण, भूजल का अतिदोहन, जल की आर्थिक मांग, मानसून के कारण मनुष्य के सामने जल संकट पैदा हो गया है।

❖ जल संरक्षण व प्रबन्धन के तीन सिद्धान्त है।

1. जल की उपलब्धता बनाए रखना
2. जल को प्रदूषित होने से बचाना
3. प्रदूषित जल को स्वच्छ करना

❖ जल संरक्षण हेतु निम्न उपाय किये जा सकते है।

1. जल को बहुमूल्य राष्ट्रीय सम्पदा घोषित कर देना चाहिए।
2. वर्षा जल का संग्रहण किया जाना चाहिए।
3. भूमिगत जल का अतिदोहरन नहीं होना चाहिए।
4. घरेलू उपयोग में जल की बर्बादी रोकी जानी चाहिए।
5. नदियो को परस्पर जोडना चाहिए।
6. सिंचाई की फव्वारा विधि व बूँद–बूँद विधि का उपयोग किया जाना चाहिए।

समाकलित जल संभर प्रबन्धन :–

❖ जल संभर एक ऐसा क्षेत्र है जिसका जल एक बिन्दू की और प्रवाहित होता है यह सहायक नदी का बेसिन है।

❖ जल संभर प्रबन्धन में मिट्टी और आर्द्रता का संरक्षण, बाढ नियन्त्रण, जल संग्रहण, वृक्षारोपण, उद्यान चारागाह विकास, सामाजिक वानिकी कार्यक्रम शामिल है।

❖ समाकलित जल संभर प्रबन्धन भारत में कृषि, ग्रामीण विकास तथा पर्यावरण वन मंत्रालय के सहयोग से संचालित है।

वर्षा जल संग्रहण :–

❖ वर्षा जल संग्रहण भूमिगत जल का पुनर्भरण करता है।

राजस्थान में वर्षा जल संग्रहण विधि

खडीन	तालाब	झील	बावडी	टोबा
1. मिट्टी का बना अस्थाई तालाब 2. ढालवाली भूमि के नीचे बनाया जाता है। 3. दो तरफ मिट्टी की दीवार एक तरफ पत्थर की दिवार	1. राजस्थान की प्राचीन विधि 2. तालाब की तलहली में एक कुआ जिसे बेरी कहते है।	1. यह वर्षा जल संग्रहण की अति प्राचीन विधि 2. इसके जल से कुआ, बावडी कुण्ड का जल स्तर बढता है।	1. राजस्थान में बावडी जल संचयन की पुरानी तकनीक है। 2. इसमें नीचे उतरने के लिए सीढी होती है। 3. इसमें कलाकृति बनी होती है।	1. थार के रेगिस्तान में जल संग्रहण का पारम्परित स्त्रोत है। 2. यह नाडी के आकार का होता है परन्तु नाडी से गहरा होता है।

कोयला एवं पेट्रोलियम का संरक्षण :–

(1) **कोयला** :–

❖ कोयला ऊर्जा का एक प्रमुख स्त्रोत है।

❖ कुल उर्जा का 35–40प्रतिशत भाग कोयला से प्राप्त होता है।

❖ वर्षो पूर्व वनस्पति के भूमि के नीचे दबने के कारण कालान्तर में उच्चताप व उच्चदाब के कारण कोयले का निर्माण हुआ।

❖ कोयले में कार्बन व हाइड्रोजन मुख्य रूप से पाया जाता है।

कोयला के प्रकार (कार्बन की मात्रा के आधार पर 4 प्रकार

एन्थ्रेसाइट	बिटूमिनस	लिग्नाईट	पीट
(94–98%)	(78–86%)	(28–30%)	(27%)

❖ वायु की अनुपस्थिति में कोयले का 1000–1400°C पर गर्म करने पर कोलतार, कोलगैस व अमोनिया प्राप्त होता है। इसे कोयला का भंजक अवसन कहते है।

J M A U P

❖ भारत में कोयला झारखण्ड, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, उडीसा व प0 बंगाल में पाया जाता है। (ट्रिक A-Jump)

(2) **पेट्रोलियम** :–

❖ पेट्रोलियम कोयले की तरह जीवाश्म ईधन है।
❖ पेट्रोलियम का निर्माण वर्षो पूर्व जीवजन्तु के भूमि के नीचे दबने के कारण कालान्तर में उच्च ताप व उच्च दाब के कारण हुआ है।
❖ अन्य नाम :– अपरिष्कृत तेल, कच्चा तेल, चट्टानो का तेल
❖ पेट्रोलियम के प्रभाजी आसवन विधि द्वारा पेट्रोल, डीजल, केरोसीन, प्राकृतिक गैस, वेसलीन, स्नेहक तेल प्राप्त होते है।
❖ पेट्रोलियम अनवीकरणीय एवं सीमित संसाधन है।

बायो डीजल :–

❖ नवीकरणीय स्त्रोतो से बनाया जाता है।
❖ परम्परागत डीजल इंजनो को बिना परिवर्तन किए चला सकता है।
❖ स्वच्छ ईंधन, पर्यावरण हितेषी
❖ जैव निम्नीकरणीय ईंधन
❖ राजस्थान सरकार ने बायोडीजल के प्रोत्साहन हेतु **बायोफयूल मिशन तथा बायोफयूल एथॉरिटी** का गठन किया है।

सतत पोषणीय विकास :– किसी भी संसाधन का प्रयोग सीमित करना चाहिए ताकि आने वाली पीढी इसका उपयोग कर सके।

चिपको आन्दोलन:– 1730 ई. में खेजड़ी के वृक्षो को बचाने के खातिर जोधपुर के **खेजडली गाँव** के विश्नोइ समाज की अमृता देवी ने अपनी तीन पुत्रियों सहित अपने जीवन की आहूती दे डाली। इसी संघर्ष में कुल 363 लोगो ने अपना बलिदान दिया।

❖ खेजड़ली के बलिदान के बाद 1973 में उत्तराखंड में महिलाओ ने चिपको आन्दोलन चलाया।
❖ इसी आन्दोलन को **सुन्दरलाल बहुगुणा** ने आगे बढाया।
❖ यही आन्दोलन कर्नाटक में **'एपिप्को'** नाम से चला जिसका अर्थ होता है चिपकना।
❖ खेजड़ी को राजस्थान का कल्पवृक्ष माना जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम **प्रोसोपिस सिनेरेरिया** है।
❖ 1983 में खेजड़ी को राजस्थान का राज्य वृक्ष घोषित किया गया।